-1-

पति नामक प्राणी के अलबेले स्वप्न

- रेखा शाह आरबी

दुनिया भर के पति नामक प्राणी कि यह दिली ख्वाहिश रहती है कि उसकी पत्नी उसके काबू में रहे। काबू में रहे अर्थात बिना अपनी जुबान को हिलाऐ डुलाए उसकी सारी बातों को चुपचाप मान ले। दिनभर ऑफिस में अपने आप को खपाने के बाद पति नामक जीव घर में थोड़ा भी अपने आप को खर्च नहीं करना चाहता है। अगर कहीं से उनको भगवान मिल जाए तो वह अपने लिए ऐसी पत्नी की डिमांड करेंगे जो देखने में सुंदर हो, गुणी हो, साथ ही सुशील हो, और बिल्कुल गाय के जैसी हो।मतलब देखने में कैटरीना, बोली में मिठास जुही चावला के जैसी हो ।मासूम भाग्य श्री के जैसी हो । जो की इस धरती पर मिलना असंभव है।यह पति नामक जीवात्मा भगवान को भी कन्फ्यूज करके रख देगे ।इतना जटिल कांबो पैक तैयार करना भला क्या आसान होगा??बिल्कुल नही जी कतई आसान नही होगा । अपने नौरंगीलाल ने भी ऐसा ही कुछ शादी से पहले सपना देखा था। की शादी के बाद वह थक हार कर ऑफिस से आएंगे तो पत्नी उनके जुते उतारेगी और वह सोफे पर फैल कर बैठेंगे।पत्नी उनके लिए गरमा गरम चाय और पकोड़े से उनका स्वागत करेगी। अब सपने देखने की किसी को मनाही थोड़े ना है। कोई कुछ भी देख सकता है। बशर्ते कि वह उसे पूरी करने की शर्त ना रखे।

एक दिन नौरंगीलाल ऑफिस से तपेतपाऐ आए थे। शायद बॉस ने आज उनकी अच्छी खासी क्लास ले ली थी। मिडिल क्लास का बहुत अच्छा है ।ऑफिस में बॉस की सुनता है । घर में बीवी की सुनता है। बुढ़ापे में बच्चों की सुनता है । जवानी में मां-बाप की सुनता है। बस उसकी कोई नहीं सुनता।

इधर नौरंगीलाल ने दरवाजे की कॉल बेल बजाई ,पहली कॉल बेल पर दरवाजा नहीं खुला तो उनके दिमाग का पारा हाई हुआ। दूसरी कॉल बेल पर दरवाजा नहीं खुला तो.. दिमाग गुस्से से लाल पीला हो गया । तीसरी कॉल बेल पर ना जाने क्या होता ..तब तक उनकी घरनी दरवाजा खोल चुकी थी। और उनका रौद्र रूप देखकर सिर झुकाए साइड में खड़ी हो गई। ।एकदम डर से कंपकपाती हुई जैसे ठंड में ठंड लगने पर इंसान कांपता है।

नौरंगीलाल उखड़ पड़े बिफरते हुए बोले---" दिन भर खाकर पड़ी रहती हो इंसान थक हार कर बाहर से आता है तो यह नहीं कि पहली बार में तुम्हे सुनाई पड़ जाए" अपना रौद्र अवतार दिखाते हुए बोले।

बकरी के जैसे मिमियाते हुए हाथ जोड़कर पत्नी धीमी आवाज में बोली--" प्राणनाथ.. माफ कर दीजिए छत पर कपड़े उतारने चली गई थी इसीलिए पहली बार में नहीं सुन पाई क्षमा प्राणनाथ क्षमा" अनेको क्षमा भाव याचना का थोड़ा सा भी फर्क नहीं पड़ा।

नौरंगीलाल आंखों से एटम बम गिराते हुए गरजते हुए बोले-- "अच्छा तो अब तुम्हारे मुंह में जबान आ चुकी है अब तुम मुझे जवाब दे रही हो तुम्हारी इतनी हिम्मत हो गई है"।

उनकी पत्नी उनके जूते उतारते हुए सूखे पत्ते के मानिंद कांप रही थी। जिस प्रकार आंधी तूफान आने पर पेड़ों के पत्ते कांपते हैं । जिसकी वजह से जूते के फीते खुलने में देरी हो रही थी । जिसे देखकर नौरंगीलाल और भड़क उठे और बोले-- " किसी काम की नहीं हो... तुम से एक जूते के फीते भी ढंग से नहीं खुल सकते हैं"।

किसी तरह जल्दी-जल्दी खोलकर धर्मपत्नी चाय नाश्ते के प्रबंध में जुट गई.. गले की टाई को थोड़ी ढीली कर पीछे सोफे से टेक लगाकर आंखें बंद किए तो नींद आ गई।

सोते-सोते अचानक किसी की कर्कश आवाज कानों में पड़ी-- " उठते हो या कुंभकरण के जैसे तुम्हारे कानों के पास नगाड़े बजवाऊ.. ऐसे तो किसी काम के हो नहीं..लेकिन सोने मे रिकॉर्ड ब्रेक कर सकते हो"।

नौरंगीलाल आंखें मलते हुए आंखें खोले तो ..देखे ना आफिस से आना ना जाना.. वह तो अपने बिस्तर में पड़े हैं । सारा सीन बदला हुआ था और यह सुबह का वक्त है और पत्नी लगातार उन पर चिल्लाए जा रही है। नवरंगी लाल उठ कर बैठे तब उन्हें समझ में आया अभी तक जो देखा वह सब सपना था ।

पत्नी बोली- "कब से चिल्ला रही हूं मेरे सिर में दर्द हो रहा है जाकर चाय बना कर ले आओ.. पर तुम हो कि घोड़े बेच कर सो रहे हो"।

नौरंगीलाल पत्नी का रौद्र रूप देखकर पीलिया के मरीज की तरफ पीले पड़ गए। और तुरंत तुरंत उठकर चाय बनाने चल दिए ...साथ ही अपने मन में सोचते जा रहे थे मेरे सपने है.. मैं कुछ भी देख सकता हूं मेरी मर्जी.. । सही बात है हम सब आजाद देश के आजाद नागरिक हैं सपने कुछ भी देख सकते हैं। और वैसे भी इस देश में सपने ही सिर्फ टैक्स फ्री है।

-2-

डाटा कर गया टाटा

मनुष्य की रगों में जितना खून नहीं दौड़ रहा है। उससे ज्यादा सोशल मीडिया दौड़ता है। हर कोई सोशल मीडिया वीर बना बैठा है। लोगों के रगों में सोशल मीडिया के इंस्ट्राग्राम, व्हाट्सएप, फेसबुक खून में प्रवाहित होता रहता है। थोड़ी देर इससे दूर रहते हैं तो उनकी इम्यूनटी कम होने लगती है। और उनकी सांस फूलने लगती है।जिस तरह किसी भी बैटरी को चार्ज होने के लिए बिजली के सम्पर्क में लाया जाता है। वैसे ही लोग सोशल मीडिया से खुद को रिचार्ज कर रहे हैं। अब यह मतिभ्रम वाला ही मामला है कि वह रिचार्ज हो रहे है कि डिसचार्ज हो रहे है।

लोगों के लिए 1GB डाटा तो गरीब के घर का आटा हो चुका है। घर में आया नहीं कि खत्म भी हो जाता है। मोबाइल में आया नहीं कि देखते ही देखते चट कर जाते हैं। ऐसा मुझे पहले लगता नहीं था। लेकिन चतुरी भैया के घर में मचे भीषण बवाल के बाद मुझे यह कहना पड़ रहा है। चतुरी भैया के घर में चार स्मार्टफोन है। लेकिन रिचार्ज इतना महंगा हो चुका है कि महंगाई के जमाने में एक ही मोबाइल किसी तरह रो गाकर रिचार्ज करवा पाते हैं।यह चतुरी भैया की आर्थिक दशा तो पाकिस्तान जैसे ही हैं । घर में भले ही खाने को आटा नहीं है लेकिन उनको रईसी हिंदुस्तान वाली चाहिए। वह कहावत तो आपने सुना होगी " कर्जा लेकर घी

पीना " वाली। खैर चतुरी भैया को कर्ज तो नहीं लेना पड़ता। लेकिन रिचार्ज करवाने के चक्कर में बहुत कुछ कंप्रोमाइज जरूर करना पड़ जाता है । फिर भी 1GB डाटा के खुशी में इतना त्याग तो चलता है।

पूरे परिवार को चूंकि अपने-अपने व्हाट्सएप, इंस्टा ,फेसबुक चलाने थे। तो डाटा भी चाहिए और डाटा मिलता था चतुरी भैया के मोबाइल में ही, सबको हॉटस्पॉट के द्वारा, वह प्रसाद के जैसे बांट देते थे । लेकिन कल रात उनके परिवार के किसी एक ने रात 12:00 ही पूरा 1GB डाटा को अपने अकेले का माल समझ कर पी गया। सुबह-सुबह जब और लोगों ने मोबाइल खोला तो डाटा ही नदारद उसके लिए सभी एक दूसरे पर पिल पड़े । और सभी एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप करने लगे । लेकिन अब क्या हो सकता था डाटा तो टाटा करके जा चुका था। सभी के चेहरे ऐसे लटक चुके थे लगता था । कितनी भारी चीज चोरी हो चुकी है। हाय रे सोशल मीडिया हाय रे सोशल मीडिया के भक्त।

सबको जानना था कि आखिर 1GB डाटा किसके पेट में गया। इसकी मरोड़ सबको उठ रही थी।बच्चे अलग उत्पाद उत्पन्न कर रहे थे। पत्नी अलग आग बबूला होकर भड़क रही थी। और चतुरी भैया इन सभी को समझने में व्यस्त थे । लेकिन कोई समझने को तैयार नहीं था। दाल- चावल -आटा होता तो पड़ोसी से मांगकर काम चला लेते । लेकिन डाटा के लिए किसके पास जाएं । आज की जमाने में सबसे अच्छा मित्र यदि किसी को माना जाता है वो जो बुरे वक्त में साथ खड़ा रहता है ।और उससे भी ज्यादा शुभचिंतंक उसको माना जाता है । जो मोबाइल में नेट खत्म हो जाने पर अपने दिल को बड़ा करके अपना हॉटस्पॉट आपके लिए उपलब्ध करा दे। बहुत बड़ा दिल होता है ऐसे मित्रों का, लेकिन चतुरी भैया के इतने मधुर संबंध किसी से भी नहीं थे की कोई उनको डाटा उपलब्ध करवा देता। और उनका पड़ोसी तो उनका जन्मजात दुश्मन हैं । उनके घर में वाई-फाई लगा हुआ है लेकिन क्या मजाल की कभी पासवर्ड दे देते। बच्चे अलग परेशान थे और बच्चों की मां अलग तूफान मचाए हुए थी । सबका मोबाइल फोन कर चेक किया गया तो पता चला चतुरी भैया ने गलती से एक लंबी चौड़ी फाइल डाउनलोड कर ली थी। और उसी में सारा डाटा टाटा करके चला गया । अब बच्चे दो दिन तक भैया को ज्ञान देंगे कि क्या मोबाइल में खोलना चाहिए और क्या नहीं खोलना चाहिए जिससे कि डाटा सुरक्षित रहे।

- 3 -

वरिष्ठ व्यंग्यकारा बनने के मूल सूत्र

हमने भले चार-पांच व्यंग्य ही लिखें। लेकिन मैं अपने आप को वरिष्ठ व्यंग्यकार लेखक मानती हूं। लोग चार कविताएं लिखकर वरिष्ठ कवयित्री बन सकते हैं । लोग रद्दी में फेंके जाने वाली दो किताबें लिखकर अपने को कालजई लेखक लिख सकते हैं। तो मैं चार-पांच व्यंग्य लिखकर वरिष्ठ व्यंग्यकार क्यों नहीं बन सकती? आजकल मनवाने का जमाना है। और उसकी शुरुआत पहले स्वयं से करनी पड़ती है । तब जाकर पूरा जमाना आप को मानता है । मैंने अपने आप को मान लिया है और आपको मुझे मानना आपको जरूरी है ।

और कोई माने या ना माने यह उनकी मर्जी और जो नहीं मानते है। ना माने मेरी बला से यह उनकी तकलीफ है मेरी नहीं। मेरा मानना है अपना मूल्यांकन स्वयं करना चाहिए। दूसरों से मूल्यांकन करवाने वाला और दाद पाने की इच्छा रखने वाला निरा बेवकूफ होता हैं । आपने वह कहावत तो सुनी होगी "अपना हाथ

जगन्नाथ" तो मैंने अपनी पीठ खुद थपथपा ली है। आप लोगों के भरोसे रहती तो पता नहीं आप लोग मेरे मुंह के दांत झड़ जाते लेकिन आप लोग पता नहीं मानते या नहीं मानते। और अपने आप को सम्मानित भी कर लिया है।इस तरह दूसरे की महत्ता ही समाप्त कर दिया है। अब वरिष्ठ लोग अपनी वरिष्ठता कृपया अपने पास रखिए।

और मैंने सब को अपने वरिष्ठ गरिष्ठ व्यंग लेखक होने का मनवाने के लिए मनाने का ठेका नहीं ले कर बैठे हैं । हां जब मुझे पुरस्कार की इच्छा जागृत होगी। तब सबको मनाने और समझाने का कार्यक्रम होगा ।और तब की तब देखी जाएगी। अभी मेरा अच्छे से गुजारा चल रहा है। और वैसे भी साहित्य मे एक नाम के हजारों पुरस्कार हैं । जो कुछ धन खर्च करने पर अर्जन हो जाता है। मैं तू न सही और सही .. वाला कांसेप्ट भी अपना सकती हूं। इसलिए ज्यादा वरिष्ठ लोगों को चौड़ा नहीं होना चाहिए कि उनके अभाव में मुझे कोई पुरस्कार नहीं मिल सकता है। अतः वरिष्ठो भाव देने का कोई विचार नहीं है । मुझे तो अपने आप को भाव देने से फुर्सत नहीं है दूसरों को क्या खाक दूंगी। और तब तक मैं इन प्रपंच में नहीं फंसना चाहती तब तक भाड़ में जाए।

यह कथित वरिष्ठ व्यंग कार अपने आप को समझने वाले भी सर्वप्रथम अपने आप वरिष्ठ गरिष्ठ समझने की शुरुआत जनता से पहले उन्होंने स्वयं की होगी। अपने नाम के आगे वरिष्ठ लगाते लगाते वरिष्ठ हो गए। और अपने साहित्य को गरिष्ठ बनाते गए हैं। तो मैंने भी बस यही तो करना है धीरे-धीरे अन्य तो यूं ही मान जाएंगे आजकल योग्यता कौन देखता है। आपने भेड़ चाल का नाम तो सुना होगा। बस थोड़ी सी समझदारी दिखाते हुए मुझे इसका फायदा उठाना है।

मेरा रचना कर्म करना उतना जरूरी नहीं है जितना हर दूसरे तीसरे दिन किसी पुस्तक का निकालना जरूरी है। और पुस्तक निकालने के लिए लिखना कतई जरूरी नहीं होता है। पुस्तक विमोचन समारोह, हिंदी उत्थान के कार्यक्रम में भाग लेना, हफ्ते में चार यंत्र तंत्र जुगाड़ करके पुस्तके निकलवाना, इन सब पर ध्यान देना जरूरी है। अपने आप को बड़ा व्यंग कार बनाने के लिए।

बहुत जल्द हो सकता है कोई व्यंग्य का ग्रुप बना लु। जिसकी सर्वे सर्वा एडमिन अध्यक्ष मैं स्वयं रहूंगी। हो सकता है कोई पुरस्कार देना भी प्रारंभ कर दूं । जिसमें मैं सबसे पहले अपने आपको वरीयता दूंगी । उसके बाद सहयोग राशि देने वाले अन्य को दिया जाएगा। तो आप भी हमारे आलतू फालतू व्यंग्य ग्रुप को ज्वाइन कीजिए। आपको भी उच्च व्यंग कार बनने के संपूर्ण अवसर मिलेंगे। जहां आप का विकास होने की भले ही गारंटी ना हो लेकिन अपना का विकास भरपूर होगा।

दुनिया की सारी शिक्षाएं किताबों से लेना जरूरी नहीं है। कुछ कुछ शिक्षाएं लोगों से भी लिया जाता है। और वही ज्यादा जीवन में काम आता है। किताबें सिर्फ थ्योरी समझाती है प्रैक्टिकल तो लोग ही समझाते हैं। और प्रैक्टिकल ने मुझे यही सिखाया है । लोगों को मान या ना मान सबसे पहले अपने को मिल जाए मान और सम्मान।

रेखा शाह आरबी

बलिया (यूपी) फोन नं. 8736863697 ईमेलः rekhasahrb@gmail.com